2 मार्च 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

समाज के जागृत रहने पर ही तीर्थ सुरक्षित रहेंगे और जीवन्त तीर्थ जिनवाणी भी सुरक्षित रहेगी।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-20

वर्ष : 31, अंक : 23 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मार्च (प्रथम), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ कुन्दकुन्द नगर प्रांगण में श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट द्वारा श्री 1008 महावीर दि.जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन शनिवार, दिनांक 7 फरवरी से शुक्रवार, 13 फरवरी, 09 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर नवनिर्मित महावीरस्वामी मानस्तंभ, श्री सीमंधर समवशरण जिनमंदिर के अतिरिक्त श्री कुन्दकुन्द कहान आगम मंदिर में विद्यमान बीस तीर्थंकर भगवंतों, भविष्य कालीन चौबीस तीर्थंकर भगवंतों की वीतराग भाववाही जिन प्रतिमायें विराजमान की गयी।

महोत्सव में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रतिदिन 'समयसार की 38 वी गाथा'** पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, पण्डित प्रकाशचंदजी मैनपुरी, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, पण्डित अशोकजी लुहाडिया अलीगढ, पण्डित अनिलजी भिण्ड एवं स्थानीय पण्डित मांगीलालजी कोलारस आदि के प्रवचनों एवं तत्त्वचर्चा का समागम प्राप्त हुआ।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के कुशल निर्देशक वाणीभूषण पण्डित श्री ज्ञानचंदजी विदिशा थे। प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली ने पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित लालजीरामजी विदिशा, पण्डित सुनीलकुमारजी भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, ब्र. नन्हेलालजी सागर, पण्डित सुकुमालजी झाँझरी आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई।

सभी कार्यक्रमों का कुशल संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया।

महोत्सव में बालक वर्द्धमान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती सुषमा जैन तथा डॉ. श्री आर. के. जैन विदिशा को मिला। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री पदमजी पहाडिया व श्रीमती रानी पहाड़िया इन्दौर थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री दीपक-अनिलकुमार सेठी व श्रीमती विनिता सेठी बैंगलोर थे।

प्रतिष्ठा महोत्सव में पूरे देश से हजारों मुमुक्षु भाई-बहिनों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से ९६ हजार ५२५ रुपये का सत्साहित्य एवं १२ हजार ४७० घण्टों के डी.वी.डी. एवं सी.डी कैसिट्स घर-घर पहुँचे।

विद्वत्सम्मान

1. सोनागिर पंचकल्याणक महामहोत्सव के मध्य तपकल्याणक के अवसर पर दिनांक 11 फरवरी 2009 को दोपहर में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा विद्वानों के सम्मान के क्रम में जैनदर्शन के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में किये गये विशिष्ट कार्यों के लिये **डॉ. मुकेश जैन शास्त्री 'तन्मय' विदिशा** का सम्मान किया गया।

इस प्रसंग पर पण्डित डॉ. विद्यानंदजी जैन विदिशा ने सम्मानमूर्ति का परिचय दिया, तदुपरान्त आपको प्रशस्ति, शॉल, श्रीफल एवं नगद राशि से पुरस्कृत किया गया।

ट्रस्ट के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने ट्रस्ट का परिचय दिया। सभा का संचालन श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

2. इसी दिन सायंकाल श्री अन्तर्राष्ट्रीय दिगम्बर जैन मुमुक्षु महासंघ द्वारा 92 वर्षीय **'कविवर राजमलजी पवैया भोपाल'** का सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पवैयाजी पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का विशेष प्रभाव रहा। आपने हजारों आध्यात्मिक भजन, सैंकड़ों पूजायें एवं शताधिक विधानों की रचना करके एक नया कीर्तिमान रचा है।

इसी अवसर पर आपके सम्मान में मुमुक्षु महासंघ द्वारा 'अध्यात्म काव्य जगत का चमकता सूरज कविवर राजमलजी पवैया' नामक अभिनन्दन स्मारिका का विमोचन किया गया। सम्मान के रूप में आपको प्रशस्ति, शॉल, श्रीफल एवं नगद राशि से पुरस्कृत किया गया। तदुपरान्त देश की अन्य प्रमुख संस्थाओं एवं उपस्थित गणमान्य महानुभावों ने भी उनका अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री मुकेश जैन 'तन्मय' ने किया।

सम्पादकीय –

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु (23)

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

२. तृषा-परीषहजय उसे होता है ह्न 'जिसने जल से स्नान करने, उसमें अवगाहन करने और उससे सिंचन करने का त्याग कर दिया है; जिसका पक्षी के समान आसन और आवास नियत नहीं है; जो अति खारे, अति स्निग्ध और अति रूक्ष, प्रकृतिविरुद्ध आहार, ग्रीष्मकालीन आतप, पित्तज्वर और अनशन आदि के कारण उत्पन्न हुई तथा शरीर और इन्द्रियों को मथनेवाली तृषा का प्रतीकार करने में आदरभाव नहीं रखता और जो पिपासारूपी अग्निशिखा को सन्तोषरूपी घड़े में भरे हुए समाधिरूपी जल से शान्त कर रहा है, उसका पिपासाजय परीषह प्रशंसा के योग्य है।[१]'

'ग्रीष्मऋतु में आतप, पित्तज्वर, अनशनादि तप से हुई पानी की कमी, शरीर और इन्द्रियों को मथनेवाली तृषा को तृप्त करने के उपाय का जिनके मन में विकल्प ही नहीं रहता है। ग्रीष्मऋतु के तीक्ष्ण सूर्य की किरणों से सन्तापित वनभूमि में निकट ही तालाब होने पर भी उसकी ओर अपने मन को चलायमान नहीं करते, जलकाय के जीवों को बाधा का परित्याग करने की इच्छा से जल की चाह रहित होते हैं।

ज्ञान-ध्यानरूप जल से तृषारूप अग्नि की शिखा को बुझाते हैं, उन साधुओं के तृषा-परीषह का जीतना होता है।[२]'

३. शीतपरीषहजय में मुनिराज विचार करते हैं कि - 'हे आत्मन्! तूने नरकों में असंख्यात वर्षों तक अनन्त बार कर्मों के वश होकर दुःसह शीतवेदना भोगी है, उसके सामने यह शीतवेदना तो कुछ भी नहीं है। शीत को दूर करने में समर्थ अग्नि, विद्या, मंत्र, औषधि, पत्र, वल्कल, तृण आदि के उपयोग करने के सम्बन्ध में मन में कुछ भी विचार नहीं करते हैं। अपने शरीर को पराये शरीर जैसा मानते हैं। तथा धैर्य से निजस्वरूप का अवलोकन करते हुए आनन्द सहित रात्रि व्यतीत करते हैं । उनके शीतपरीषहजय होता है।[३]'

'शीतपरीषहजय के समय मुनिराज आत्मध्यान से अपनी शीत वेदना को दूर करते हैं और उस शीत की वेदना को शान्त करने के लिए न तो कुछ ओढ़ने का चिन्तवन करते हैं और न शीत को दूर करनेवाले अग्नि आदि पदार्थों का चिन्तवन करते हैं।[४]''

४. उष्णपरीषहजय में 'चारित्र की रक्षा करने के लिए दाह का प्रतीकार करने की इच्छा का अभाव होता है।

ग्रीष्म ऋतु के सूर्य की अति उष्ण किरणों से जिनका शरीर सन्तापित रहता है, तृषा से उत्पन्न गर्मी, अनशन तप के कारण पित्त के प्रकोप से हुई गर्मी तथा मार्ग की थकान से उत्पन्न गर्मी से पीड़ित रहने पर भी मुनि आधुनिक एयर कंडीशनर व कूलर आदि का उपयोग नहीं करते, जल में अवगाहन, चन्दन-कर्पूरादि का लेप, जल के छिड़काव से ठण्डी भूमि का स्पर्श, पुट्ठे एवं केले के पत्तों द्वारा की गई हवा, बर्फ इत्यादि शीतल पदार्थों की चाह उनके चित्त में उत्पन्न नहीं होती।

मुनि अपने चित्त में विचार करते हैं कि 'मैंने इस संसार में पराधीन होकर अति तीव्र उष्णवेदना भोगी है। अब तो मैं कर्म-क्षय करने के कारणरूप तप करने में उद्यमी हुआ मोक्षमार्ग का पथिक हूँ; इसलिए मुझे संयम की घातक क्रियाओं की उपेक्षा करके चारित्र की रक्षा करना है।[१]' ऐसे स्वच्छ-शान्तभाव के धारक साधु के उष्णपरीषहजय होता है।

उस समय वे निराश्रय पशुओं, मनुष्यों व नारकियों के कर्मों के उदय से होनेवाली तीव्र उष्णवेदना से अपनी तुलना करते हैं और श्रेष्ठ ज्ञानरूपी अमृत का पान करते हैं। इन दोनों कारणों से वे उस गर्मी की वेदना को जीतते हैं।

५. दंशमशकपरीषहजय में 'दंशमशक अर्थात् मच्छरों की बाधा सहन करते हैं। उनका प्रतीकार नहीं करते।'

'दंशमशक' पद से डांस-मच्छर, मक्खी, पिस्सू, खटमल, कीट, चींटी और बिच्छू आदि का ग्रहण होता है। जो इनके द्वारा की गयी बाधाओं को बिना प्रतीकार किये सहन करते हैं; मन, वचन और काय से उन्हें बाधा नहीं पहुँचाते हैं; वह दंशमशकपरीषहजय है।[२]'

'जिन्होंने शरीर को ढँकने का त्याग किया है, अपने रहने के स्थान को वस्त्रों से भी बाँधकर घेरने का त्याग किया है। डाँस, मच्छर, बिच्छू इत्यादि तीव्रवेदना उत्पन्न करनेवाले अनेक जीवों के तीक्ष्ण डंकों द्वारा मर्मस्थान में काट लेने पर भी अपने परिणामों में विषाद नहीं करते हैं। अपने कर्म के उदय का विचार करते हैं। किसी विद्या, मंत्र, औषधि आदि उपचार से उस परीषह को दूर करने की इच्छा नहीं करते हैं। कर्मरूपी शत्रु के नाश के लिए उद्यमयुक्त होकर समस्त जीवों के प्रति दया के उद्यमी होकर रहते हैं, उनके दंशमशकपरीषहजय होता है।[३]'

६. नग्नपरीषहजय में 'जो नग्न अवस्था धारण करने से बहुत से ठण्डी-गर्मी के उपद्रव होते हैं, अनेक जीव काट लेते हैं और अनेक लोग उनको देखकर हँसते हैं। इन सब उपद्रवों को दिगम्बर अवस्था को धारण करनेवाले मुनिराज बिना किसी प्रकार के संक्लेश परिणामों के धैर्य के साथ सहन करते हैं, इसे ही नाग्न्यपरीषहजय कहते हैं।[४]'

७. अरतिपरीषहजय में 'संयम विषयक अरति को दूर करना होता है। जो संयत इन्द्रियों के इष्ट विषय-सम्बन्ध के प्रति निरुत्सुक हैं; जो गीत, नृत्य और वादित्र आदि से रहित शून्यघर, देवकुल, तरुकोटर और शिलागुफा आदि स्थानों पर स्वाध्याय, ध्यान और भावना में लीन हैं; पहले देखे हुए, सुने हुए और अनुभव किये हुए विषयभोग के स्मरण, विषयभोग सम्बन्धी कथा नहीं करते/सुनते उनके अरति-परीषहजय होता है।'

१. सर्वार्थसिद्धि, ९/९ २. अर्थप्रकाशिका, ९/९
३. अर्थप्रकाशिका, ९/९ ४. मूलाचार प्रदीप, ३१३७

१. अर्थप्रकाशिका, ९/९ २. सर्वार्थसिद्धि, ९/९
३.अर्थप्रकाशिका, ९/९ ४. मूलाचार प्रदीप, गा.३१४३-४४

८. स्त्रीपरीषहजय में 'साधु वारांगनाओं का रूप देखने के भावों की उनका स्पर्श करने के भावों की निवृत्ति करते हैं। स्त्री–परीषहजयी साधु 'बगीचा और भवन आदि एकान्त स्थानों में नवयौवन और मदिरापान से प्रमत्त हुई स्त्रियों के द्वारा बाधा पहुँचाने पर कछुए के समान जिसने इन्द्रिय और हृदय के बहिर्मुखी उपयोग को अपने में समेट लेते हैं और मनोविकार को रोकते हैं तथा जिन्होंने मन्द मुस्कान, कोमल सम्भाषण, तिरछी नजरों से देखना, हँसना, मदभरी धीमी चाल से चलना आदि को निष्फल कर दिया है; उनके स्त्रीपरीषहजय होता है।[१]'

'कोई मुनिराज किसी एकान्त स्थान में विराजमान हों और वहाँ पर उन्मत्त यौवनवती स्त्रियाँ आकर हाव, भाव, विलास, शरीर के विकार, मुख के विकार, भोहों के विकार, गाना बजाना, बकवाद करना, कटाक्षरूपी वाणों का फेंकना और शृंगाररस का प्रदर्शन आदि कितने ही कारणों से व्रतों को नाश करनेवाला अनर्थ करती हों तो भी वे मुनिराज निर्विकार होकर उस उपद्रव को सहन करते हैं; इसको स्त्रीपरीषहजय कहते हैं।[२]'

९. चर्यापरीषहजय में गमन सम्बन्धी दोषों का निग्रह करना होता है।

'जो मुनिराज भयानक वन में, पर्वत पर, किलों में और नगरों में विहार करते हैं तथा उस विहार में पत्थरों के टुकड़े, काँटे आदि के लग जाने से पैरों में अनेक छोटे–छोटे घाव हो जाते हैं; तथापि वे दिगम्बर मुनिराज उन सबको सहन करते हैं, जीतते हैं; इसको चर्यापरीषहजय कहते हैं।[३]'

१०. निषद्यापरीषहजय में 'संकल्पित आसन से विचलित नहीं होने रूप होता है।'

'जिनमें पहले रहने का अभ्यास नहीं है ह्न ऐसे श्मशान, उद्यान, शून्यघर, गिरिगुफा आदि में जो निवास करते हैं, आदित्य के प्रकाश और स्वेन्द्रिय ज्ञान से परीक्षित प्रदेश में जिन्होंने नियम किया है, जो नियत काल निषद्या लगाकर बैठते हैं, सिंह और व्याघ्र आदि की नाना प्रकार की भीषण ध्वनि के सुनने से जिन्हें किसी प्रकार का भय नहीं होता, चार प्रकार के उपसर्ग के सहन करने से जो मोक्षमार्ग से च्युत नहीं हुये हैं तथा वीरासन आदि आसन के लगाने से जिनका शरीर चलायमान नहीं होता; उनके निषद्यापरीषहजय निश्चित होता है।[४]'

'जो मुनिराज किसी गुफा में पर्वत पर या वनादिक में वज्रासन आदि कठिन आसन से विराजमान होते हैं और उस समय भी अनेक उपसर्ग उन पर आ जाते हैं; तथापि वे मुनिराज अपने आसन से कभी चलायमान नहीं होते; इसीप्रकार कठिन आसन धारण करके भी वे अपने को ध्यान में ही लगाये रहते हैं और अपने योग को सदा अचल बनाये रखते हैं; उनके इस परीषह सहन करने को निषद्यापरीषहजय कहते हैं।[५]'

१. सर्वार्थसिद्धि, ९/९ २. मूलाचार प्रदीप, ३१४७–४८
३. मूलाचार प्रदीप, ३१४९–५० ४. सर्वार्थसिद्धि, ९/९
५. मूलाचार प्रदीप, ३१५१–५२

११. शय्यापरीषहजय करता हुआ साधु 'आगम में कथित शयन से चलित नहीं होता है।'

यह स्थान सिंह, व्याघ्र, सर्प आदि दुष्ट जीवों से भरा हुआ है, यहाँ से शीघ्र ही निकल जाना श्रेयस्कर है, कब यह रात्रि समाप्त होगी' ह्न इस प्रकार के संकल्प–विकल्पों को नहीं करनेवाले, सुख–स्थान के मिलने पर भी हर्ष से उन्मत्त नहीं होनेवाले, पूर्व में अनुभूत मृदु शय्या का स्मरण न करके आगमोक्त विधि से शयन करनेवाले साधुजनों के शय्या–परीषहजय होता है।[१]'

'जो मुनि स्वाध्याय, ध्यान, योग और मार्ग का परिश्रम दूर करने के लिए युक्तिपूर्वक मुहूर्तमात्र की निद्रा का अनुभव करते हैं, उस समय में भी अपने हृदय को अपने वश में रखते हैं, दण्ड के समान वा किसी एक करवट से सोते हैं, उसको शय्या–परीषहजय कहते हैं।[२]'

१२.आक्रोशपरीषहजय में साधुजन अनिष्ट वचनों को सहते हैं।

'जो मुनिराज कठोर वचनों को, अपमानजनक शब्दों को, तिरस्कार या धिक्कार के वचनों को अथवा अनेक प्रकार के गाली–गलौच के शब्दों को सुन करके भी, मन–वचन–काय की शुद्धतापूर्वक उनको सहन करते हैं, उनको सुनकर कभी किसी प्रकार का क्लेश नहीं करते, उन मुनियों के आक्रोश परीषहजय कहा जाता है।[३]'

कठोर वचन सुनते समय मुनिराज विचार करते हैं कि ह्न सामनेवाले व्यक्ति के कर्म के उदय से अज्ञानभाव हो रहा है, हमें देखकर इन्हें दुःख उत्पन्न हुआ है, ये कर्म के परवश हैं, यह इनका अपराध नहीं, मेरे ही अशुभकर्म का उदय है ह्न ऐसा विचारकर दूसरों के द्वारा कहे गये दुर्वचनों से क्लेश को प्राप्त नहीं होते हुए अनिष्ट वचनों को सह लेते हैं, उनके आक्रोश परीषहजय होता है।[४]'

१३. वधपरीषहजय में साधु मारनेवालों केप्रति क्रोध नहीं करते हैं।

'चारों तरफ घूमनेवाले, चोर, भील, शत्रु और द्वेषाविष्ट मिथ्यादृष्टि आदि के द्वारा क्रोधपूर्वक ताड़न, बन्धन, शस्त्राभिघात आदि के द्वारा मारने पर भी जो मुनि बैर नहीं करते हैं। यह उनका वध परीषह है।'

१४. याचनापरीषहजय में 'प्राणों का नाश होने पर भी दीनतापूर्वक आहारादि की याचना नहीं करते सैकड़ों व्याधि और क्लेशों के हो जाने पर भी तथा अनेक उपवासों के बाद पारणा करने पर भी कभी औषधि, आहार अथवा जल की याचना नहीं करते यही साधुओं का याचना–परीषहजय है।'

१५. अलाभपरीषहजय में साधु 'आहार, वसतिका आदि के अलाभ में भी लाभ के समान सन्तुष्ट रहते हैं। आहारादि प्राप्त न होने पर भी अपने ज्ञानानन्द के अनुभव द्वारा विशेष सन्तोष धारण करना अलाभ–परीषहजय है।' **(क्रमशः)**

१. तत्त्वार्थवार्तिक, ९/९ २. मूलाचार प्रदीप, ३१५३–५४
३. मूलाचार प्रदीप, ३१५५–५६ ४. अर्थप्रकाशिका, ९/९

नागपुर मुमुक्षु समाज का सराहनीय प्रयास : श्री महावीर विद्या निकेतन

आज के भौतिकवादी युग में वीतरागी तत्त्वज्ञान को आनेवाली पीढी तक पहुँचाना एवं इस तत्त्व को जीवंत बनाए रखना समाज के समक्ष एक चुनौती भरा कार्य है; किन्तु पूज्य गुरूदेव श्री कानजी स्वामी ने समाज को जिनागम के रहस्यों से अवगत कराके और मिथ्या कुरीतियों से मुक्त कर मानो संजीवनी ही प्रदान की है। उन्होंने तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की इस चुनौती को आसान बना दिया है।

पूज्य गुरूदेवश्री के पश्चात् देश की अनेक संस्थाओं द्वारा इस आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की धारा को अनवरत प्रवाहित करने के अथक् प्रयास किए गए। इन प्रयासों के अंतर्गत सत्साहित्य का प्रकाशन, आध्यात्मिक शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों का आयोजन, जिनायतनों की निर्माण, विद्यालयों की स्थापना, पाठशालाओं का संचालन, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की स्थापना, आध्यात्मिक धार्मिक पत्रिकाओं का प्रकाशन, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आदि महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो रहे हैं।

इन्हीं प्रयासों की श्रृंखला में सन् 1988 में नागपुर मुमुक्षु मण्डल द्वारा श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट की स्थापना तथा सन् 1992 में श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर का निर्माण सम्पन्न हुआ। मण्डल की स्थापना से ही यहाँ निरन्तर प्रात: एवं रात्रिकालीन स्वाध्याय नियमित चल रहा है। साथ ही मण्डल के साधर्मियों की सक्रियता एवं तत्त्वरूचि के फलस्वरूप आध्यात्मिक शिक्षण शिविर, बाल संस्कार शिविर, सत्साहित्य प्रकाशन व विक्रय, अनेक मंडल विधान पूजाओं का आयोजन आदि तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ अनवरत रूप से सफलतापूर्वक संचालित की जा रही हैं।

इन्हीं गतिविधियों को आगे बढाने हेतु हमारी आगामी पीढी के बालक छोटी उम्र में ही संस्कारवान और तत्त्वज्ञान से परिचित हों-इस पवित्र भावना से श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर ने **श्री महावीर विद्या निकेतन** का प्रारंभ किया है।

इस विद्या निकेतन हेतु 4500 वर्गफीट के विशाल क्षेत्रफल में सर्व सुविधायुक्त चार मंजिलों में श्री वीतराग-विज्ञान भवन का निर्माण किया गया, जिसके अन्तर्गत तलघर में पार्किंग और कर्मचारी निवास, ग्राउण्ड फ्लोर पर प्रवचन तथा शिविरादि अन्य कार्यक्रमों के लिए श्री कहान सभाग्रह, प्रथम तल पर श्री अमृत भोजनालय और 4 साधर्मी निवास कक्ष बनाए गए हैं। साथ ही एक समाधि कक्ष यहाँ विकसित किया जा रहा है।

दूसरी मंजिल पर विद्यार्थियों के आवास हेतु 9 कक्ष तथा अध्यापकों के लिए दो फ्लैट तथा तीसरी मंजिल पर विशाल छत के साथ साधर्मियों के निवास के लिए 4 कक्षों का निर्माण किया गया है। सर्वसुविधायुक्त श्री वीतराग विज्ञान भवन तथा श्री महावीर विद्या निकेतन का उद्घाटन दिनांक 6 जुलाई 2008 को अनेक गणमान्य साधर्मियों की उपस्थिति में उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस विद्यालय में कक्षा आठवीं में बालकों को प्रवेश देकर दसवीं तक अध्ययन कराया जाएगा। इसके पश्चात् उच्च अध्ययन हेतु श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ, आचार्य अंकलंक शिक्षण संस्थान बाँसवाड़ा, मुमुक्षु आश्रम कोटा आदि स्थानों पर संचालित महाविद्यालयों में प्रवेश हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित किया जाएगा।

श्री महावीर विद्या निकेतन में इस वर्ष महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के 18 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ इनका लौकिक अध्ययन सेमी इंग्लिश तथा हायर इंग्लिश मीडियम से नागपुर के प्रतिष्ठित विद्यालयों में सम्पन्न हो रहा है। समस्त विद्यार्थियों के आवास, भोजन, ट्यूशन एवं धार्मिक अध्यापन आदि की समस्त उच्चस्तरीय सुविधाएँ ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध कराई जा रही हैं। साथ ही इस भवन में बाहर से पधारने वाले मुमुक्षु साधर्मी भाइयों के आवास तथा भोजन की सुविधा भी यहाँ पर उपलब्ध कराई गई है।

आगामी सत्र वर्ष 2009-2010 हेतु विद्यालय में 20 छात्रों को कक्षा आठवीं में प्रवेश देना निश्चित हुआ है। इसप्रकार आगामी सत्र में यहाँ पर कुल 38 छात्र अध्ययन करेंगे। वर्ष 2011 तक कुल 50 विद्यार्थियों के अध्ययन की सुविधा यहाँ उपलब्ध कराई जाएगी। इस सत्र में प्रवेश हेतु इच्छुक प्रवेशार्थियों की समस्त प्रवेश प्रक्रिया प्रत्यक्ष साक्षात्कार के माध्यम से नागपुर में सम्पन्न होगी, जिनकी सूचना आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी।

इस विद्यालय में अध्ययनरत बालकों में प्रार्थना, पूजा, भक्ति, प्रवचन, पाठशाला, साप्ताहिक गोष्ठियाँ, नैतिक संस्कार आदि के माध्यम से संस्कारों के बीजारोपण करने का कार्य पंडित जितेन्द्रकुमारजी राठी शास्त्री पारशिवनी, पंडित जितेन्द्रजी शास्त्री सिंगोड़ी एवं पंडित प्रसन्नजी शेटे शास्त्री कोल्हापुर अनवरत रूप से कर रहे हैं तथा पंडित विपिनजी शास्त्री श्योपुर, पंडित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर, पंडित श्रुतेशजी सातपुते शास्त्री नागपुर एवं पंडित मनीषजी शास्त्री सिद्धांत खड़ैरी का भी सहयोग प्राप्त होता रहता है।

वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु श्री महावीर विद्या निकेतन के संचालन जैसा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और सार्थक कार्य समाज के सहयोग बिना सम्भव नहीं है, अत: आपसे शक्ति अनुसार सहयोग प्रदान करने की अपेक्षा है। आपका सहयोग और सम्बल पाकर हम इस महाविद्यालय के साथ-साथ अन्य नवीन गतिविधियों के संचालन करने में अपने आपको समर्थ महसूस करेंगे। आप इन समस्त गतिविधियों का निरीक्षण, मार्गदर्शन और स्नेह प्रदान करने हेतु सादर आमंत्रित हैं। विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्ककरें।

संपर्क सूत्र- श्री महावीर विद्या निकेतन, श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमन्दिर के पास, नेहरू पुतले के सामने, इतवारी, नागपुर (महाराष्ट्र)

फोन-0712-2772378- अशोकजी जैन, मो.9371270638 जयकुमारजी देवड़िया, 09373289447-सुदीपजी जैन।

सौजन्य : श्री शिखरचन्दजी भगवानदास जी मोदी, नागपुर

सिद्धचक्र मण्डल विधान सम्पन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ परकोटा स्थित श्री महावीर जिनालय में दिनांक 13 जनवरी से 17 जनवरी, 09 तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का भव्य आयोजन हुआ।

प्रथम दिन मंगल कलश शोभायात्रा के पश्चात् श्री प्रकाशचन्दजी चौधरी परिवार द्वारा ध्वजारोहण हुआ। प्रतिदिन प्रात: पूजन–विधान के पश्चात् बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री–दिल्ली के विधान की जयमाला पर प्रवचन हुये।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में सहयोगी पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित कांतिलालजी इन्दौर एवं पण्डित सुनीलकुमारजी 'धवल' भोपाल ने सम्पन्न कराये।

इस अवसर पर पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना एवं स्थानीय पण्डित महेन्द्रजी, पण्डित निर्मलजी, पण्डित नन्हेलालजी के प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रमों में युवा फैडरेशन के अध्यक्ष श्री अरविन्दजी के साथ–साथ सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ। **ह्न संतोष जैन, आदित्य जैन**

बेस्ट सोलापुरकर आफ द इयर

महाराष्ट्र की ख्याति प्राप्त शिक्षा संस्था श्री ऐल्लक पन्नालाल दिगम्बर जैन पाठशाला, सोलापूर के विश्वस्त एवं सचिव **मा. रणजीत गाँधीजी** को दैनिक सकाल सोलापूर (दैनिक अखबार) द्वारा आयोजित वर्ष–2008 के '**बेस्ट सोलापुरकर आफ द इयर**' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

शिक्षण यही धर्म इस व्रत का पालन करनेवाली यह संस्था आज लगभग 125 साल पूरे कर रही हैं। इस संस्था के अंतर्गत पूर्व प्राथमिक से लेकर स्नातकोत्तर तक लगभग सभी शाखाओं के विभाग कार्यरत हैं।

संस्था के भूतपूर्व सचिव स्व. भाउसाहेब गांधीजी के सुपुत्र श्रीमान डॉ. रणजीत गांधी सुचारू एवं व्यवस्थित ढंग से चला रहे हैं। इस संस्था का दर्जा बढाने में स्व.भाउसाहेब गांधी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

जैनपथप्रदर्शक समिति एवं श्री टोडरमल महाविद्यालय की ओर से आपको हार्दिक शुभकामनायें ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

"A" ग्रेड संस्था

जैन अल्पसंख्यक इंजिनीयरींग कॉलेज

वालचंद इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, सोलापूर

Website : www.witsolapur.org
E-mail : principal@witsolapur.org

सकल जैन समाज के छात्रों को चार वर्षीय डिग्री इंजिनीयरींग कोर्स मे प्रथम वर्ष प्रवेश के लिए 50% सिटें आरक्षित हैं।

महाराष्ट्र के बाहरी उम्मीदवारोंको MHT-CET 09 परीक्षा देना अनिवार्य है।
आवेदन पत्र प्राप्त और जमा करने की तिथी : 13 मार्च से 25 मार्च 2009; परीक्षा की तिथी : 7 मई 2009

आवेदन पत्र प्राप्त तथा जमा करनेका स्थान किसी एक डिव्हीजनल अँथोरिटी का द्वार है। डिव्हीजनल अँथोरिटी के दप्तरों की सुचि प्रसिध्दी पत्र क्र. DMER/MH-CET-2009/ Notification No. 2 /1-A (Dt. 7 Feb. 2009) मे दि गई है। यह प्रसिध्दी पत्र तथा जानकारी पुस्तिका www.dte.org.in/fe2009 तथा www.dmer.org उपलब्ध है। वर्ष २००९–२०१० प्रवेश प्रक्रियाकी विस्तृत जानकारी यथा समय हमारे कॉलेज के वेबसाईट पर उपलब्ध होगी।

तथा प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण डिप्लोमा धारक को भी
Direct Second Year Engineering प्रवेश के लिए 50% सीटे आरक्षित है।

हमारी विशेषताएँ • More than 100 PG Teachers • Almost 100% Campus Placement • More than 60 Companies for Campus Recruitment

महाविद्यालय तथा प्रवेश प्रक्रिया के बारे मे अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

प्रा. प्रसन्न एखंडे : 09422457311 प्रा. संजीव जमगे : 09822790360

डॉ. एस.ए. हलकुडे
प्राचार्य

डॉ. रणजित गांधी
सेक्रेटरी

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 23

चौथा प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र में 'तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ह्न तत्त्वार्थों का श्रद्धान ही सम्यग्दर्शन है' ह्न ऐसा कहकर सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्वार्थों के परिज्ञानपूर्वक सम्यक् श्रद्धान को आवश्यक बताया गया है। यही कारण है कि महापण्डित टोडरमलजी इस मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ में उनका विवेचन विस्तार से करना चाहते थे।

जीवादि नव तत्त्वार्थों का निरूपण उन्होंने नौवें अधिकार में आरंभ भी किया था; परन्तु हम सभी के दुर्भाग्य से वह लिखा नहीं जा सका।

यद्यपि जीवादि तत्त्वार्थों का विशद विवेचन वे नहीं लिख सके; तथापि मोक्षमार्गप्रकाशक जिस रूप में हमें आज उपलब्ध है, उसमें उन्होंने यह बहुत विस्तार से यह स्पष्ट कर दिया कि जीवादि पदार्थों को समझने में हमसे किस-किसप्रकार की, क्या-क्या भूलें होती रही हैं।

इन भूलों की चर्चा उन्होंने दो स्थानों पर की है। चौथे अधिकार में अगृहीत मिथ्यादर्शन की अपेक्षा और सातवें अधिकार में गृहीत मिथ्यादर्शन की अपेक्षा। अभी हम चौथे अधिकार में समागत जीवादि तत्त्वार्थों संबंधी भूलों की चर्चा कर रहे हैं।

आत्महितकारी प्रयोजनभूत तत्त्वों का अयथार्थ श्रद्धान ही अगृहीत मिथ्यादर्शन है और इनका यथार्थ श्रद्धान ही सम्यग्दर्शन है। अत: सर्वप्रथम प्रयोजनभूत तत्त्वों को जानना अति आवश्यक है। यही कारण है कि चौथे अधिकार में पण्डितजी प्रयोजनभूत तत्त्वों का स्वरूप स्पष्ट करते हैं।

वे लिखते हैं ह्न ''यहाँ कोई पूछे कि प्रयोजनभूत और अप्रयोजनभूत पदार्थ कौन हैं?

समाधान ह्न इस जीव को प्रयोजन तो एक यही है कि दु:ख न हो और सुख हो। किसी जीव के अन्य कुछ भी प्रयोजन नहीं है। तथा दु:ख का न होना, सुख का होना एक ही है; क्योंकि दु:ख का अभाव वही सुख है और इस प्रयोजन की सिद्धि जीवादिक का सत्य श्रद्धान करने से होती है। कैसे ? सो कहते हैं ह्न

प्रथम तो दु:ख करने में आपापर का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। यदि आपापर का ज्ञान नहीं हो तो अपने को पहिचाने बिना अपना दु:ख कैसे दूर करे ? अथवा आपापर को एक जानकर अपना दु:ख दूर करने के अर्थ पर का उपचार करे तो अपना दु:ख दूर कैसे हो ?

अथवा अपने से पर भिन्न हैं, परन्तु यह पर में अहंकार-ममकार करे तो उससे दु:ख ही होता है। आपापर का ज्ञान होने पर ही दु:ख दूर होता है। तथा आपापर का ज्ञान जीव-अजीव का ज्ञान होने पर ही होता है; क्योंकि आप स्वयं जीव है, शरीरादिक अजीव हैं।

यदि लक्षणादि द्वारा जीव-अजीव की पहिचान हो तो अपनी और पर की भिन्नता भासित हो; इसलिए जीव-अजीव को जानना।

अथवा जीव-अजीव का ज्ञान होने पर, जिन पदार्थों के अन्यथा श्रद्धान से दु:ख होता था, उनका यथार्थ ज्ञान होने से दु:ख दूर होता है; इसलिए जीव-अजीव को जानना।

तथा दु:ख का कारण तो कर्म बन्धन है और उसका कारण मिथ्यात्वादिक आस्रव हैं। यदि इनको न पहिचाने, इनको दु:ख का मूल कारण न जाने तो इनका अभाव कैसे करे ? और इनका अभाव नहीं करे तो कर्मबंधन कैसे नहीं हों ? इसलिए दु:ख ही होता है। अथवा मिथ्यात्वादिक भाव हैं सो दु:खमय है। यदि उन्हें ज्यों का त्यों नहीं जाने तो उनका अभाव नहीं करे, तब दुखी ही रहे; इसलिए आस्रव को जानना।

तथा समस्त दुख का कारण कर्मबन्धन है। यदि उसे न जाने तो उससे मुक्त होने का उपाय नहीं करे, तब उसके निमित्त से दु:खी हो; इसलिए बन्ध को जानना।

तथा आस्रव का अभाव करना सो संवर है। उसका स्वरूप न जाने तो उसमें प्रवर्तन नहीं करे, तब आस्रव ही रहे, उससे वर्तमान तथा आगामी दु:ख ही होता है; इसलिए संवर को जानना।

तथा कथंचित् किंचित् कर्मबन्ध का अभाव करना उसका नाम निर्जरा है। यदि उसे न जाने तो उसकी प्रवृत्ति का उद्यमी नहीं हो, तब सर्वथा बन्ध ही रहे, जिससे दु:ख ही होता है; इसलिए निर्जरा को जानना।

तथा सर्वथा सर्व कर्मबन्ध का अभाव होना उसका नाम मोक्ष है। यदि उसे नहीं पहिचाने तो उसका उपाय नहीं करे, तब संसार में कर्मबन्ध से उत्पन्न दु:ख को ही सहे; इसलिए मोक्ष को जानना।

इसप्रकार जीवादि सात तत्त्व जानना।

तथा शास्त्रादि द्वारा कदाचित् उन्हें जाने, परन्तु ऐसे ही हैं ह्न ऐसी प्रतीति न आयी तो जानने से क्या हो ? इसलिए उनका श्रद्धान करना कार्यकारी है। ऐसे जीवादि तत्त्वों का सत्य श्रद्धान करने पर

ही दु:ख होने का अभावरूप प्रयोजन की सिद्धि होती है। इसलिए जीवादिक पदार्थ हैं, वे ही प्रयोजनभूत जानना।

तथा इनके विशेष भेद पुण्य-पापादिरूप हैं, उनका भी श्रद्धान प्रयोजनभूत हैं; क्योंकि सामान्य से विशेष बलवान है।

इसप्रकार ये पदार्थ तो प्रयोजनभूत हैं, इसलिए इनका यथार्थ श्रद्धान करने पर तो दु:ख नहीं होता, सुख होता है; और इनका यथार्थ श्रद्धान किए बिना दु:ख होता है, सुख नहीं होता।

तथा इनके अतिरिक्त अन्य पदार्थ हैं, वे अप्रयोजनभूत हैं; क्योंकि उनका यथार्थ श्रद्धान करो या मत करो, उनका श्रद्धान कुछ सुख-दु:ख का कारण नहीं है।[१]''

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की उक्त पंक्तियों से यह अत्यन्त स्पष्ट है कि अनंत दुखों से मुक्ति के लिए जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष तथा पुण्य और पाप ह्न इन नौ तत्त्वार्थों को जानना और वे जैसे हैं; उन्हें वैसा ही जानकर श्रद्धान करना ही प्रयोजनभूत है; क्योंकि इन्हें यथार्थ जानकर इनका श्रद्धान करना ही सम्यग्दर्शन है, सम्यग्ज्ञान है।

मिथ्यादर्शनादि का यह अगृहीत और गृहीत संबंधी विवेचन जिस रूप में और जितने विस्तार से इस मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ में प्राप्त होता है, उस रूप में और उतने विस्तार से इसके पहले उपलब्ध नहीं होता।

यद्यपि इसके बीज आगम में यत्र-तत्र सर्वत्र बिखरे हुए प्राप्त हो जायेंगे; तथापि मोक्षमार्गप्रकाशक के समान व्यवस्थित रूप में देखने में अभी तक नहीं आये।

अत: यदि हम यह कहें कि यह टोडरमलजी का मौलिक प्रस्तुतीकरण है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

परवर्ती साहित्यकारों ने इनका अनुकरण किया है। विशेषकर पण्डित श्री दौलतरामजी ने अपनी अमर कृति छहढाला में इस प्रस्तुतीकरण का भरपूर उपयोग किया है और मोक्षमार्गप्रकाशक के इस प्रकरण को पद्य के रूप में अति संक्षेप में सशक्त रूप से प्रस्तुत कर दिया है।

पण्डित दौलतरामजी का छहढाला एक ऐसी कृति है, जिसकी पकड़ जन-जन तक है और वह न केवल अध्यात्मप्रेमी, अपितु सम्पूर्ण समाज में लगभग सभी को कण्ठस्थ है।

छहढाला के प्रभाव से मिथ्यादर्शनादि का यह अगृहीत-गृहीत संबंधी वर्गीकरण भी सभी के लिए अति परिचित विषय हो गया है।

अत: किसी को ऐसा लगता ही नहीं कि यह वर्गीकरण महापण्डित टोडरमलजी के पूर्व सहज प्राप्त नहीं होता।

पदार्थों का प्रयोजनभूत और अप्रयोजनभूतरूप में वर्गीकरण भी टोडरमलजी की ऐसी विशेषता है कि जो उनके पूर्व देखने को नहीं मिलती। समयसार गाथा ११ व १३ में भूतार्थ और अभूतार्थ की चर्चा अवश्य है, पर वह नयों के संदर्भ में है। कहा गया है कि व्यवहारनय अभूतार्थ हैं और शुद्धनय (निश्चयनय) भूतार्थ हैं। यह भी कहा गया है कि भूतार्थनय से जाने हुए नवतत्त्व ही सम्यग्दर्शन हैं।

'भूतार्थ' पद 'भूत' और 'अर्थ' ह्न इन दो शब्दों से मिलकर बना है। 'भूतार्थ' पद के उक्त दोनों शब्दों का स्थान परिवर्तन कर दें तो अर्थभूत पद बनेगा। 'अर्थ' शब्द का अर्थ 'प्रयोजन' भी होता है; इसलिए 'भूतार्थ' पद का अर्थ 'प्रयोजनभूत' ही हो जाता है।

यहाँ मोक्षमार्गप्रकाशक में जीवादि प्रयोजनभूत पदार्थों के श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहा जा रहा है और समयसार में भूतार्थनय से जाने हुए जीवादि तत्त्वों के श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहा है। ●

विधान एवं शिलान्यास समारोह सम्पन्न

द्रोणगिर (म.प्र.) : यहाँ सिद्धायतन में सोमवार, दिनांक 9 फरवरी, 2009 को श्री 1008 महावीरस्वामी दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर महामस्तकाभिषेक, पंचकल्याणक विधान एवं सिद्धायतन के मुख्यद्वार व बाउड्रीवाल का शिलान्यास समारोह आयोजित किया गया।

इस प्रसंग पर श्री ऋषभकुमार जी (कर्रापुर) सागर ने ध्वजारोहण किया। शिलान्यास श्री अनंतभाई ए.सेठ मुम्बई के करकमलों से किया गया। विधानकर्त्ता श्री मस्तांई प्रेमचन्द प्रमोदकुमार परिवार घुवारा थे।

इस अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में सेठ गुलाबचन्दजी जैन सागर, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री मुकेशजी जैन एवं श्री राजेन्द्रजी सेठी इन्दौर उपस्थित थे।

इस प्रसंग पर पण्डित कोमलचन्दजी टड़ा सिद्धायतन, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित अरूणजी शास्त्री बड़ामलहरा आदि विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ। **ह्न मुन्नालाल जैन बड़ामलहरा**

हार्दिक बधाई !

दिनांक १६ फरवरी ०९ को चि. शोभित एवं सौ. स्मिता के शुभविवाह के अवसर पर श्रीमान एस. के. जैन विद्याधरनगर जयपुर की ओर से ग्यारह सौ एक रुपये की राशि प्राप्त हुई।

जैनपथप्रदर्शक समिति की ओर से आपको हार्दिक बधाई !

2 मार्च 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय में शास्त्री अंतिमवर्ष के छात्रों का

विदाई एवं दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में 18 फरवरी, 09 को श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को भावभीनी विदाई दी गई।

इस प्रसंग पर त्रिमूर्ति जिनमंदिर में प्रात: सम्मेद शिखर विधान का आयोजन किया गया। पूजन-विधान के समस्त कार्यक्रम शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्र विवेक जैन, दीपेश जैन एवं करण शाह के निर्देशन में समस्त महाविद्यालय परिवार के सहयोग से सम्पन्न हुये। विधानोपरान्त दो सत्रों में विदाई सभा का आयोजन किया गया।

सभा की प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, पण्डित अमितजी शास्त्री, श्री दिलीपभाई शाह आदि महानुभावों ने छात्रों के हितार्थ मार्मिक उद्बोधन दिये।

इस अवसर पर संस्कृत के विशिष्ट अध्यापक श्रीराजधरजी मिश्र एवं डॉ. सतीश कपूरजी ने विद्यार्थियों को लौकिक एवं पारलौकिक शैली से जीवन जीने की प्रेरणायें दी।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल ने विद्यार्थियों द्वारा पाँच वर्षों में की पढाई को अन्य लौकिक पढाई की तुलना में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया।

सभा का शुभारम्भ दीपेश जैन के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ

समारोह में शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों में अजय जैन पीसांगन, अनुराग जैन, अंकित जैन, भरत कोरी, महेन्द्र मिरकुटे, तपिश जैन, संदीप जैन, संदीप चौगले, रविन्द्र मसलकर, नीतेश जैन, दीपक मंजलेकर, सुधीर जैन, शशांक जैन एवं स्वाति जैन ने महाविद्यालय में व्यतीत किये हुए पाँच वर्षों के अनुभवों, अनुजों को मार्गदर्शन एवं अपनी आगामी योजनाओं के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए महाविद्यालय परिवार एवं गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। सभी ने तत्त्वप्रचार-प्रसार हेतु सदैव सहयोग देने की उत्कृष्ट भावना को अभिव्यक्त किया।

शास्त्री अन्तिम वर्ष के विद्यार्थियों को श्रीमती कमलाजी भारिल्ल ने तिलक लगाकर एवं शास्त्री द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

आयोजन के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की, उन्होंने अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये विशेषरूप से तैयार किये गये स्मृति-चिन्ह का अनावरण किया। तदुपरान्त श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल द्वारा श्रीफल भेंट कर विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पं.रतनचंदजी भारिल्ल के करकमलों से शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को 'सिद्धान्तशास्त्री' की उपाधि प्रदान की गई।

कार्यक्रम के अन्त में महाविद्यालय के विशिष्ट क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करनेवाले विद्यार्थियों में **आदर्श छात्र** के रूप में शास्त्री अंतिम वर्ष से तपिश जैन उदयपुर, **अध्ययन क्षेत्र** में शास्त्री तृतीय वर्ष से अजय जैन पीसानगंज, **चिकित्सकीय योगदान** के लिये शास्त्री अंतिम वर्ष से महेन्द्र मिरकुटे आसेगांव को पुरस्कृत किया गया।

वर्ष 2008-09 की **सर्वश्रेष्ठ कक्षा** के रूप में शास्त्री प्रथम वर्ष को चल वैजयंती प्रदानकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन अभिषेक जैन, अभिषेक जोगी, चिन्तामण भूस एवं संयम शेट्टे ने किया। आभार प्रदर्शन विवेक जैन ने किया।

शोक समाचार

1. **वल्लभनगर जिला उदयपुर निवासी श्रीमती महताबबाई** ध.प. श्री कन्हैयालालजी कमावत (जैन) का दिनांक 18 दिसम्बर, 08 को समताभाव पूर्वक समाधिमरण हुआ। आप धार्मिक, स्वाध्यायी एवं आत्मार्थी महिला थीं। आपकी स्मृति में 50,000/- रुपये ध्रुवफण्ड हेतु प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

2. **बीना (म.प्र.) निवासी** पं. गुलाबचन्दजी जैन की मातेश्वरी **श्रीमती छोटीबाईजी** का 85 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक पंचनमस्कार मंत्र सुनते-सुनते देहावसान हो गया। उनकी पुण्यस्मृति में वीतराग-विज्ञान को 501/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127